Lecture No (02)

Name of the College - A.P.S.M. College, Barauni, Begusarai.
L.N.M.U. Darbhanga.

Name - Dr. Bharti Kumari (GT)

Deptt - A.I.H. & C

Lession / plan - B.A Part I (H) A.I.H. & C Paper - I

Name of the Topic — बौद्धधर्म के पतन के कारण

Date - 28-06-2021

बौद्धधर्म में छोटी-छोटी जटिलता ने अपना स्थान बना लिया था, और उसमें तरह-तरह के दोष उत्पन्न हो गए थे। उसमें भी आडंबरों का पर्याप्त समावेश हो गया था। बौद्धों ने कुछ हिन्दू-देवताओं को भी अपने धर्म में स्थान देना आरम्भ कर दिया था, और उनका ईश्वरीय शक्ति पर विश्वास होना भी आरम्भ हो गया था। जनता बौद्धधर्म को नास्तिकों का धर्म समझने लगी थी। अशोक के बाद बौद्धधर्म को बहुत दिनों तक राजकीय संरक्षण प्राप्त नहीं हुआ। गुप्तकाल में हिन्दुधर्म का पुनरुत्थान हुआ और इससे भी बौद्धधर्म को धक्का लगा। हिन्दुओं ने बौद्धधर्म की बहुत सारी बातों को अपने धर्म में समाविष्ट कर लिया। बौद्धधर्म के अनुयायी दो दलों में विभक्त हो गए और उसमें भी उन कुरीतियों का समावेश हो गया, जिनकी प्रतिक्रिया के रूप में बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव हुआ था। बौद्ध विहारों और मठों में भ्रष्टाचार आरंभ हो गया। बौद्ध लोग भोग-विलास का जीवन व्यतीत करने लगे। बौद्धमठों में धन-संग्रह होने लगा। और उसका कुपरिणाम देखा जाने लगा। ये षड्यंत्रों के केन्द्र भी बन गए। दुर्बलताएँ छिपाने के लिए नए सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाने लगा। और उनके अनुसार नवीन ग्रंथों की रचना हुई। जादू-टोने से भी बौद्धों का विश्वास शुरु हो गया। हूणों के आक्रमण ने बौद्धधर्म को शीघ्र पतन की ओर अग्रसर किया। उन्होंने बौद्ध मंदिर, मठ, विहार P.T.O.

Scanned with CamScanner

आदि का अंत कर दिया। मुसलमानों का आक्रमण भी इस धर्म के पतन का कारण माना जाता है। कारण यह है कि बौद्धमठ धन का गढ़ समझा जाता था। और प्रत्येक विदेशी आक्रमणकारी मठों पर आक्रमण कर धन प्राप्त करना चाहता था। ब्राह्मणवर्ग एवं हिंदूधर्म के माननेवाले राजा लोग इस धर्म का बराबर विरोध ही करते थे। बौद्धधर्म में विभिन्न संप्रदायों के जन्म के फलस्वरूप परस्पर विरोध की भावना भी बढ़ गई थी। जब ब्राह्मणों ने बुद्ध को अवतार मानकर अपने ग्रंथों में स्थान दिया। तब बुद्ध की महिमा प्रायः गिर गई। बौद्धधर्म में भी देवी-देवताओं की भरमार हो गई। भिक्षुओं ने जनभाषा पालि का परित्याग कर संस्कृत को अपना लिया। मठ अब शराब और व्यभिचार का अड्डा बन गया। पाल-राजवंश के अंत होते ही बौद्धधर्म पर से राजाओं का संरक्षण भी हट गया। बौद्ध धर्म के ह्रास का मुख्य कारण यह कहा जा सकता है कि जनता के साथ इसका संपर्क टूट चुका था। मुसलमानों के आक्रमण के बाद बहुत से बौद्धों ने इस्लामधर्म स्वीकार कर लिया। बौद्धों के योग्य नेताओं और संगठनकर्ताओं का अभाव हो गया था। शंकराचार्य ने भक्तिमार्ग का प्रदर्शन किया। जिसका प्रभाव जनसाधारण पर विशेष रूप से पड़ा।

भारती कुमारी
AI-36 2C
Date-28-06-2021

Scanned with CamScanner